रूपक, गुरु नानक के कदमों की रुहानी छाप

एपिसोड ६: पहेली (गहरा संदेश)

'पहेली', 'गहरा संदेश' आत्मविश्वास से भरे बुद्धिजीवी गुरु नानक के आदर्श भाव। यह इशारे एक ऐसे शहर में आलोचनात्मक सोच पैदा करते हैं जिसे 'बदकारी' से जीता नहीं जा सकता। पहेली उन संतों को नमन करती है जिनका इंक़लाबी फ़लसफ़ा गुरु नानक के साथ मेल खाता है।

राणा राउ न को रहै रंग न तुँग फकीरु ॥
वारी आपो आपणी कोइ न बंधै धीर ॥
(राग रामकाली, गुरु नानक)

हर राजे, नेक, अमीर, ग़रीब और फ़कीर ने चले जाना है।
सभी को अपनी बारी से जाना है किसी का ठिकाना शाश्वत नहीं है।
(राग रामकाली, गुरु नानक)

समय ऐसा विस्तार है जिसकी थाह नहीं पाई जा सकती। यह सूक्ष्म पल है जिसका कोई अतीत और कोई भविष्य नहीं है। जब सचाई यह है की सारी दुनिया चलायमान है तो टेक लगाने का क्या मतलब? हर पल को आख़िरी समझ कर जीया जाये।

गुरु नानक और भाई मरदाना नानकमत्ता से नानकपुरी टांडा और गोला गोकर्ण नाथ होते हुये अयोध्या पहुंचे। पहले वह नानकमत्ता के पश्चिम में टांडा पहुंचे जिसे अब नानकपुरी टांडा कहा जाता है।

हम अब नानकमत्ता से नानकपुरी टांडा जा रहे हैं जो रामपुर ज़िले का एक छोटा सा शहर है। यह क्षेत्र धान की खेती के लिये प्रसिद्ध है।

नानकपुरी टांडा में हम गुरुद्वारा नानकपुरी टांडा जा रहे हैं जो इस स्थान पर गुरु नानक के आगमन की याद में बनाया गया है।

अमरदीप सिंह: टांडा तराई क्षेत्र का कस्बा है। चौदहवीं शताब्दी में यह सौदागरों का ठिकाना था और यहां बहुत सारे ख़ानाबदोश रहते थे।

जब गुरु नानक और भाई मरदाना टांडा पहुंचे, तो एक ख़ानाबदोश परिवार अपने बेटे के जन्म का जश्न मना रहा था। होनी के लिखे के मुताबिक अगले दिन बच्चे की मौत हो गई। ख़ुशियां मनाने वाले लोग कुछ घंटों बाद ही मातम मना रहे थे। शोक संतप्त परिवार को धैर्य बंधाने के लिये, गुरु नानक ने समझाया कि ख़ुशी और गमी वक्त के बेकाबू घोड़े पर सवार पल मात्र होते हैं। जन्म और मृत्यु जीवन का खेल है और प्रकृति का नियम है। उनके साथ ठिकाना करना व्यर्थ है। दानाई में गुज़ारा छोटा जीवन, किसी भ्रम में काटे गये लंबे जीवन से कहीं अधिक शानदार है।

हरि का नाम न चेतै प्राणी बिकल भइआ संग माइआ ॥
धन सिउ रता जोबन मता अहिला जनम गवाइआ ॥
(सिरी राग, गुरु नानक)

प्राणी बग़ैर सोच-विचार किये माया जाल में फंस जाता है।
पदार्थवाद में डूबे और यौवन के नशे में धुत दुर्लभ मानव जीवन बर्बाद हो रहा है।
(सिरी राग, गुरु नानक)

हमारे विचार ख़ानाबदोशों की तरह भटकते रहते हैं। हम तुच्छ सुखों के लिये लक्ष्यहीन भटकते हैं और पालनहार के गुणों पर चिंतन करने में नाकामयाब रहते हैं। भौतिकवाद में लिप्त होकर हम इलाही जीवन को व्यर्थ में बर्बाद करते हैं और यह एहसास नहीं करते हैं कि जीवन मिथ्या है और मृत्यु अटल है।

इस छोटे से शहर टांडा में एक-दूसरे के नज़दीक पांच गुरुद्वारे हैं। यह गुरुद्वारे इस स्थान पर गुरु नानक के आगमन को ऐसी कथाओं के साथ जोड़ते हैं जो सबसे पुरातन जन्मसाखियों में दर्ज नहीं है। इस वृत्तांत के अनुसार, जब गुरु नानक ने इस स्थान का दौरा किया था, तब इस क्षेत्र को रोहेलखंड कहा जाता था। यह ग़ुलामों की सौदागरी के लिये बदनाम था। कथा यह सुनाई जाती है कि गुरु नानक ने खुद को नौजवान बना लिया जिससे अपने-आप को 'रोहिला पठान' द्वारा चार बार अपहरण और बेचे जा सकें। आगे कथा यह बताई जाती है कि गुरु नानक ने चमत्कार किये, एक कुएं को सुखाया, एक फलदार बाग़ को उजाड़ दिया, भरा मोदीख़ाना खाली कर दिया और एक भेड़ को जीवित करने के लिये उसे मार दीया । उन्होंने हर मौके पर ग़ुलामी की जंज़ीरों को तोड़ा।

गुरु नानक ने अपनी बाणी में 'हुकम' शब्द का बहुत इस्तेमाल किया; शायद वह इसके महत्व को उघाड़ना चाहते थे। मुझे यकीन है कि उन्होंने दासों के सौदागरों का सामना किया होगा और अपनी समझदारी के शब्दों और ज्ञान की दलीलों के माधयम से उन्हें बदल दिया होगा। मुझे लगता है कि गुरु नानक के फ़लसफ़े की गहराई को समझने में कहीं हमारी नाकाबलियत तो नहीं है कि हम उन्हें ऐसे वृतांत के माध्यम से प्रस्तुत करने की कोशिश कर रहे हैं जो हमारी सतही और सीमित सोच का परिणाम है।

नदर करहि तू तारहि तरीऐ सच देवह दीन दइआला ॥
प्रणवत नानक दासन दासा तू सरब जीआ प्रतिपाला ॥
(राग तुखारी, गुरु नानक)

परिवर्तन के लिये ज्ञान की कृपा करो। नम्र मनुष्य को सत्य का सौभाग्य प्रदान करो, हे दयावान।
नानक दासों के दास होने का अनुरोध करते हैं। आख़िर करुणा ही सबकी पालनहारी है।
(राग तुखारी, गुरु नानक)

सांसारिक उलझनों का ग़ुलाम हुआ मानव मन, फ़लसफ़े के गहरे धागों की सलाहियत से वंचित रह जाता है और सतही स्तर पर अटका रहता है। ग़ुलामी के बारे में गुरु नानक का संदेश है कि वह उनके दास बनने के लिये तैयार हैं जो सृष्टि के अनुरूप हैं।

गुरु नानक और भाई मरदाना ने नानकपुरी टांडा के दक्षिण-पूर्व की ओर गोला गोकर्ण नाथ का सफ़र शुरू किया।

हम गुरु नानक के पदचिन्हों पर नानकपुरी टांडा से गोला गोकर्ण नाथ जा रहे हैं जो लखीमपुर खीरी शहर के पास है।

गुरु नानक के समय में, तराई क्षेत्र सघन जंगल था और आबादी कम थी।

अमरदीप सिंह: गोला प्राचीन शहर है जो गोला गोकर्ण शिव मंदिर के लिये प्रसिद्ध है और 'नाथ जोगियों' का केंद्र था। जब गुरु नानक ने इस स्थान का दौरा किया, तो गोला शहर के साथ शारदा नदी बहती थी, लेकिन अब यह दूर हो गई है।

हम गोला गोकर्ण नाथ के प्राचीन शिव मंदिर जा रहे हैं। शिव हिंदू मज़हब की त्रिमूर्ति में विनाशकारी शक्ति माने जाते हैं। सोलहवीं शताब्दी में नाथ जोगी इस मंदिर का अभिन्न अंग थे। ऐसा कहा जाता है कि जब गुरु नानक गोला गोकरन नाथ नाथ पहुंचे तो उनकी 'नाथ जोगियों' के साथ गोष्ट हुई।

गोला गोकरन नाथ नाथ मंदिर में शिव का प्रतिनिधित्व करने वाला 'शिवलिंग' यहां पारंपरिक लिंग के रूप में स्थापित नहीं है, बल्कि इसके नक्श गाय के कानों से मेल खाते हैं। साखी यह सुनाई जाती है कि भगवान शिव का भक्त, राजा रावण विद्वान होने के साथ-साथ बहुत अहंकारी था। उससे जब 'शिवलिंग' नहीं उठाया गया तो उसने हताश होकर उसे नीचे दबा दिया। उस विद्वान और बदनाम राजा रावण और इस स्थान से जुड़ी साखी को याद करके मेरे मन में विचार चलता है कि विवेक, श्रद्धा और अज्ञानता क्या हैं?

अंतरि अगिआन दुख भरम है विच पड़दा दूर पईआसि ॥
बिन सतिगुर भेटे कंचन ना थीऐ मनमुख लोह बूडा बेड़ी पास ॥
(राग मलार, गुरु नानक)

मनुष्य के अंदर अज्ञानता दुख और भृम हैं। इनसे छुटकारा ज्ञान के साथ मिलता है।
आत्म-पड़चोल से समृद्ध व्यक्ति ही विचार और ध्यान से एकसुर हो सकता है।
(राग मलार, गुरु नानक)

मेरी छोटी सी समझ के अनुसार अगर किसी विद्वान व्यक्ति ने अहंकार को मन में बसा रखा है तो वह अज्ञानी है। अज्ञानता के मूल की पहचान ही सच्चा ज्ञान है। इत्तेफ़ाक के नियम मानना ही भक्ति है।

हम गुरु नानक के पदचिन्हों से घुमाव लेकर चल रहे हैं और उन संतों को अपने सफ़र में शामिल कर रहे हैं जिनकी बाणी को गुरु ग्रंथ साहिब में शामिल किया गया है। कुछ संत गुरु नानक से पहले थे और कुछ उनके समकालीन थे।

गुरु नानक के समय में, हिंदू और इस्लाम धर्मों के अनुयायियों के लिये, मज़हब का अर्थ केवल पुजारियों और मुल्लाओं के हुक्मों और कर्मकांडों का पालन करना था। समय के साथ, इस दस्तूर ने बुनियादी फ़लसफ़े के दायरे को कम करना शुरू कर दिया। दसवीं शताब्दी में लोगों और मज़हब के बीच की दरार को भरने के लिये भारतीय उपमहाद्वीप में एक ही समय में दो सुधार आंदोलन उभरे। हिंदू मज़हब में 'भक्ति आंदोलन' और

इस्लाम में 'सूफ़ी सिलसिले' शुरू हुये। बग़ावत की दोनों लहरों ने स्थानीय बोलियों में कविता के माध्यम से अपना इज़हार किया और दोनों ने एक ही सृजनहार को सजदा किया जो कण-कण में समाया है।

गुरु नानक भी एक सृजनहार को मानने वाले थे - यह फ़लसफ़ा एकता का हिमायती है और द्वैत को रद्द करता है। उनका फ़लसफ़ा रूहानियत की 'भक्ति' और 'सूफ़ी' धाराओं से एकसुर है।

हम गुरु नानक के पदचिन्हों से घुमाव लेकर कन्नौज जा रहे हैं जो भगत परमानंद से जुड़ा शहर है।

माना जाता है कि भगत परमानंद और गुरु नानक समकालीन थे। उनके मिलने का कोई प्रमाण नहीं है लेकिन गुरु ग्रंथ साहिब में उनके एक शबद को शामिल करने से साबित होता है कि उनके विचार मिलते हैं। भगत परमानंद के बारे में बहुत कम जानकारी है। एक ओर ऐसा माना जाता है कि वह महाराष्ट्र राज्य के बार्शी के रहने वाले थे, लेकिन दूसरी ओर उनकी पहचान उत्तर प्रदेश के कन्नौज के ब्राह्मण परमानंद दास के रूप में की जाती है।

कन्नौज में हम ने भगत परमानंद से जुड़े कोई यादगार खोजने का अथक प्रयास किया। दुर्भाग्यवश, किसी भी निवासी को उस सच्चे संत के बारे में पता नहीं था।

चंदन भगता जोत इनेही सरबे परमल करणा ॥
(राग तिलंग, गुरु नानक)

चन्दन की तरह संतों की सुगंध चारों-तरफ फैलती है।
(राग तिलंग, गुरु नानक)

चंदन का पेड़ अपने आसपास के वातावरण को सुगंध से भर देता है। इसी प्रकार सदबुद्धि लोग इतिफ़ाक के प्रेम से ज्ञान का प्रकाश कर देते हैं और समाज में सद्भाव की सुगंध फैलाते हैं।

इस समय कन्नौज इत्र बनाने का प्रसिद्ध केंद्र है। सुगंध की शक्ति यह है कि यह अदृश्य है, लेकिन यह महक बिखेरती है। इसी तरह चाहे कन्नौज शहर को भगत परमानंद याद नहीं हैं, लेकिन उनके फ़लसफ़े की सुगंध दूर-दूर तक फैली हुई है।

तै नर किआ पुरान सुन कीना ॥
अनपावनी भगत नही उपजी भूखै दान न दीना ॥
हिंसा तउ मन ते नही छूटी जीअ दइआ नही पाली ॥
परमानंद साधसंगत मिल कथा पुनीत न चाली ॥
(राग सारंग, भगत परमानंद)

हे मनुष्य, तुमने ग्रथ को सुन कर क्या समझा है।
तुम्हारे भीतर श्रद्धा के कोंपल नहीं फूटे हैं। ना ही तुम्हारे मन में ज़रुरतमंदों को भिक्षा देने की भावना है।
तुम्हारा मन ज़ुल्म से मुक्त नहीं है और तुम्हारे मन में दूसरों के लिये दया का स्थान नहीं है।
परमानंद ने सवाल पूछा कि तुम सदगुणों की संगति में ज्ञान के पथ के राहगीर क्यों नहीं हुये?
(राग सारंग, भगत परमानंद)

भगत परमानंद ने अपने इस शबद में श्रद्धा की संजीदगी और नैतिक आचरण की गंभीरता को कर्मकांड से ज़्यादा अहमियत देते हुये उघाड़ा किया है। पवित्र पुस्तकों को ध्यान दिये बिना पढ़ना किसी के चरित्र की गंदगी को नहीं धो सकता है। सही सोच से जोड़ी बना कर ही श्रद्धा के समुन्द्र में डुबकी लगाई जा सकती है।

कन्नौज से अयोध्या जाते हुये हम गुरु नानक के पदचिन्हों से एक ओर घुमाव ले रहे हैं। हम काकोरी में संत भीखन शाह की यादों को ढूंढने जा रहे हैं, जिनका फ़लसफ़ा गुरु नानक से मेल खाता है। भीखन शाह काकोरी गांव के सूफ़ी संत थे। वह गुरु नानक के समकालीन थे। उनका जन्म चौदह सौ तिरासी में हुआ था। उन्होंने 'भक्ति' और 'सूफ़ी' आंदोलनों के प्रभाव में अर्थहीन कर्मकांडों और प्रथाओं का खंडन किया।

इतिहासकार बदायूंनी लिखते हैं कि भीखन शाह एक महान विद्वान थे। शिक्षण और ज्ञान प्रदान करने के लिये अपना जीवन समर्पित करने वाले भीखन शाह ख़ुद को 'कारी' कहते थे, जिसका मतलब है विधार्थी, तालिब-इलम। इस उपनाम में उनके व्यक्तित्व की विनम्रता झलकती है।

हर गुन कहते कहन न जाई ॥
जैसे गूँगे की मिठिआई ॥
रसना रमत सुनत सुख स्रवना चित चेते सुख होई ॥
कहु भीखन दुइ नैन संतोखे जह देखाँ तह सोई ॥
(राग सोरठ, भगत भीखन)

सृजनहार का गुण अकथनीय है।
यह एक बेज़ुबान व्यक्ति द्वारा मिठाई के स्वाद का वर्णन करने की कोशिश करने जैसा है।
जो ज़ुबान शांति की बातें करती है जो कान शांति के शब्द सुनते हैं और जो मन गोष्ट करता है उन्ही से मनुष्य शऊर से संपन्न हो जाता है।
भीखन ने कहा कि मेरी नज़रों में संतोष है और मैं जहां भी देखता हूं सृजनहार नज़र आता है।
(राग सोरठ, भगत भीखन)

जैसे बे-ज़बान मनुष्य बोलकर मिठास का स्वाद नहीं बता सकता, उसी प्रकार आत्म-पहचान की आनंदमय स्थिति को वर्णमाला में नहीं बांधा जा सकता है।

गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज भीखन शाह की बाणी का मानना है कि दैवीय गुण मानव रोगों के ख़िलाफ़ जीवनदायिनी के रूप में कार्य करते हैं। उनके वंशजों ने इस अध्ययन केंद्र के माध्यम से उनकी सोच को जीवित रखा है।

अनवर हबीब अल्वी: हज़रत भीखन शाह की शिक्षाओं से हज़रत गुरु नानक देव जी का इत्तेफ़ाक और पसंदगी रही कि केवल मनुष्य ही मनुष्य को जानें और एक-दूसरे के लिये भलाई के काम करें। एक-दूसरे से मुहब्बत करें। तमाम सूफ़ियों के शब्दों को गुरु ग्रंथ साहिब में शामिल किया गया था। जब सूफ़ी बुज़ुर्गों के संदेश साफ़-सुथरे तरीके से एक साथ आये, तो यह ज्ञान का स्रोत बन गया। दुनिया के लोगों को जोड़ने का एकमात्र सूत्र प्यार है।

सुण सुण बूझै मानै नाउ ॥
ता कै सद बलिहारै जाउ ॥
(राग गौड़ी, गुरु नानक)

जो मनुष्य सुनने, समझने और कार्य करने के लिये तैयार है
मैं हमेशा उस मनुष्य पर कुर्बान जाता हूं।
(राग गौड़ी, गुरु नानक)

हमारे चारों ओर अनहद नाद गूंज रहा हैं। केवल प्रबुद्ध विवेक का व्यक्ति ही ज्ञान की इन धुनों को समझता है और उन पर कार्य करता है।

गुरु नानक और भाई मरदाना ने गोला गोकर्ण नाथ से शारदा नदी में नाव से सफ़र किया और शारदा और घाघरा के संगम पर ब्रह्म घाट पहुंचे। इसके बाद वह घाघरा नदी में नाव से अयोध्या गये।

गुरु नानक के पदचिन्हों से थोड़ा घुमाव लेने के बाद हम फिर से उनके पदचिन्हों पर चलते हुये गोला गोकर्ण से अयोध्या का सफ़र कर रहे हैं।

अमरदीप सिंह: घाघरा नदी जिसे सरयू भी कहते हैं, उसके किनारे अयोध्या शहर बसा हुआ है। यह नाम संस्कृत भाषा से आया है जो ऐसे स्थान का रूपक है जिसे बुरे कर्मों से नहीं जीता जा सकता है।

अयोध्या अफसानवी राजा रामचंद्र का जन्मस्थान है और हिंदू मज़हब का महत्वपूर्ण तीर्थ स्थल है।

कहानियों को दार्शनिक स्तर पर बताया और समझा जाये तो वह प्रेरणा का एक बड़ा स्रोत हो सकती हैं। 'रामायण' रामचंद्र से जुड़ा महाकाव्य है जो गहरे दृष्टांतों के माध्यम से एक रूहानी संदेश देता है।

रामचंद्र उस शुद्ध चेतना की नुमाइंदगी करते हैं जिसका अयोध्या में वास है, ऐसा राज्य जिसमें कोई संघर्ष नहीं है। रामचंद्र के पिता का नाम 'दशरथ' दो शब्दों 'दस' और 'रथ' से मिलकर बना है जो ज्ञान और कर्म की दस इंद्रियों की नुमाइंदगी करता है। रामचंद्र की पत्नी सीता मन की नुमाइंदगी करती हैं। रामचंद्र और सीता का बनवास सांसारिक मामलों की नुमाइंदगी करता है। द्वैत की स्थिति में अहंकार मनुष्य को धोखे की चपेट में ले लेता है। यहां अहंकार की चपेट में आये मानव मन की रूपक के तौर पर नुमाइंदगी सीता और फरेब की रूपक के तौर पर नुमाइंदगी रावण करता है। बंदरों का लश्कर उदारता की फुर्ती की रूपक के तौर पर नुमाइंदगी करता है। रूपक के तौर पर यह युद्ध बुराइओं को हराने वाले आत्मनिरीक्षण के तरीके की नुमाइंदगी करता है। इसमें लालसाओं के केंद्र को निशाना बनाकर जीत हासिल की जाती है जिसकी नुमाइंदगी नाभि करती हैं। जब इच्छाओं पर विजय प्राप्त कर ली जाती है तो मानव मन संतुलन में आ जाता है।

हम अब गुरुद्वारा ब्रह्म कुंड जा रहे हैं जो गुरु नानक की अयोध्या आने की याद में बनाया गया था। यह स्थान गुरु तेग बहादुर और गुरु गोबिंद सिंह की अयोध्या आने की भी यादगार है।

अमरदीप सिंह: घाघरा नदी के पास गुरुद्वारा ब्रह्म कुंड, गुरु नानक और भाई मरदाना के अयोध्या आने का सबसे पुराना यादगार स्थल है।

रामचंद्र को श्रद्धा के फूल भेंट करने आने वाले तीर्थयात्रियों के साथ गोष्ट करने के लिये गुरु नानक अयोध्या पहुंचे।

गुरु नानक ने अयोध्या में बहुत गहरा संदेश दिया,

नानक निरभउ निरंकारु होर केते राम रवाल ॥
केतीआ कंन्न कहाणीआ केते बेद बीचार ॥
केते नचहि मंगते गिड़ मुड़ पूरहि ताल ॥
बाजारी बाजार मह आइ कढह बाजार ॥
(राग आसा, गुरु नानक)

नानक ने फ़रमाया कि हाज़रा-हज़ूर ही निडर और निरंकार है। दुनिया में लोग आते हैं और फ़ना हो जाते हैं।
उनके ज़ाहिर होने की अनेक कहानियां हैं और अनंत चिंतन ग्रन्थों में दर्ज है।
बहुत से इंसान ख्वाहिशों के घेरे में हाथ फैलाते हैं और धुरी पर घूमते हैं।
जैसे व्यापारी अपने माल की नुमाइश के लिये बाज़ार में आते हैं।
(राग आसा, गुरु नानक)

गुरु नानक ने फ़रमाया कि मन निरंकार और हाज़रा-हज़ूर सृजनहार से जुड़ने के लिये जिस्मानी पहलुओं का आसरा लेता है, जबकि फ़ानी संसार में आवा-गमन चलता रहता है। सब कुछ मिट्टी से उगता है और उसी में विलीन हो जाता है।

गुरु नानक ने घाघरा नदी के घाटों पर लोगों को मुक्ति की आशा में घोर तप करते देखा तब यह शबद गाया।

जगन होम पुँन तप पूजा देह दुखी नित दूख सहै ॥
राम नाम बिन मुकत न पावस मुकत नाम गुरमुख लहै ॥१॥
राम नाम बिन बिरथे जग जनमा ॥
बिख खावै बिख बोली बोलै बिन नावै निहफल मर भ्रमना ॥
(राग भैरव, गुरु नानक)

लोग आग में नियाज़ डालते हैं दान देते हैं और जप-तप करते हैं लेकिन भीतर से दुखी हैं।
सोच-विचार के बिना मोक्ष संभव नहीं। विवेक अपनाने वाले मनुष्य को चैन मिलता है।
आत्ममंथन के बिना मनुष्य जन्म व्यर्थ है।
विषैला बोलना ज़हर खाने जैसा है और अविश्वास के भँवर में रहना रूहानी मौत मरने के बराबर है।
(राग भैरव, गुरु नानक)

हम दिन-रात भ्रम में भटकते रहते हैं। सादगी और गंभीरता का जीवन ही मुक्ति का एकमात्र मार्ग है। तप मुक्ति का मार्ग नहीं।

गुरु तेग़ बहादुर और गुरु गोबिंद सिंह ने भी अयोध्या का दौरा किया। जब गुरु गोबिंद सिंह अयोध्या आये, तब यहां राजा मान सिंह का शासन था।

हम यतिंदर मिश्रा से मिलने जा रहे हैं जो राजा मान सिंह के वंश से हैं।

यतिंदर मिश्रा: हमारे यहां गुरु गोबिंद सिंह के अयोध्या पहुंचने की कहानी प्रचलित है। उन्होंने एक बाग़ में ठहराव किया और मज़हबी उपदेश देने शुरू किये। वहां भीड़ इकट्ठा हो गई और राजा साहिब ने गुरु गोबिंद सिंह जी के चरणों में अपना सत्कार भेंट किया और कहा कि वह जिस जगह बैठे हैं उसी स्थान को सम्मान के तौर पर भेंट करते है और स्वयं को मज़हबी दीक्षा के लिये पेश करते हैं। तभी से इसे मोहल्ला नज़रबाग़ कहा जाने लगा।

हम अब गुरुद्वारा नज़रबाग़ जा रहे हैं।

अमरदीप सिंह: गुरुद्वारा नज़रबाग़ अयोध्या के राजा मान सिंह के दान में दिये हुये शाही बाग़ में बना हुआ है।

यतिंदर मिश्रा: अयोध्या में विभिन्न धर्मों और संप्रदायों के भाईचारे धारायें बहती हैं। यह धारायें एक-दूसरे की पूरक हैं। दोनों मिलकर 'वसुदेव कुटुम्बकम' का निर्माण करती हैं। इसके बारे में मैंने 'संमति' कविता लिखी है जो मैं आपके लिये पढ़ देता हूँ:

क्या फ़र्क पड़ता है इससे, अयोध्या में पद की जगह कोई शब्द गाये।

दूर ननकाना साहिब में मतवाला जपुजी छोड़कर कव्वाली ले करके आये।
फ़र्क तो इस बात से भी नहीं पड़ता, हम बाला और मरदाना से पूछ सकते हैं।
नानक के वचनों पर गुल उकेरने वाले, उन दोनों के हाथों में एक तारा था,
अक्सर सुर छेड़ते समय, खुसरो और कबीर के घर क्यों घूम आते हैं?
फ़र्क तो आज यह भी नहीं पड़ता, बात-बात में रदीफ़-काफ़िया मिलाने वाले,
हर चीज़ में फ़र्क को पहचानने वाले, शायद ही कभी झगड़े हो इसके लिये,
राम की पहुँच डागरों की हवेली और ख़ान साहिब की बंदिशों तक क्यों है?
और क्यों बैजू से लेकर, आज तक, बावरी होने वाली कला की नवीनतम पीढ़ी भी,
आगे बढ़कर सबसे पहले, रहीम और रसख़ान से दोस्ती करती है।

मानव मन भौतिक संसार से रूहानी झलक चाहता है। गुरु नानक ने फ़रमाया हैं इतनी दूर क्यों जाऐं? रूहानियत तो मानव बुत में वास करती है जो खुद पवित्र स्थान है। इसे सिर्फ़ पहचानने की ज़रुरत है।

दूर न जाना अंतरि माना हरि का महल पछाना ॥
(राग तुखारी, गुरु नानक)

दूर जाने की ज़रुरत नहीं अपने अंदर के मन में
उसकी पहचान करो।
(राग तुखारी, गुरु नानक)

चर्चा के लिए कुछ संकेतक

रूपक, गुरु नानक के कदमों की रुहानी छाप

एपिसोड ६: पहेली (गहरा संदेश)

ये चर्चा संकेतक नानकमत्ता से अयोध्या तक गुरु नानक की यात्रा के समृद्ध ऐतिहासिक और दार्शनिक पहलुओं को उजागर करते हैं। ऐतिहासिक दृष्टिकोण से, वे विभिन्न समुदायों के साथ उनके वृत्तांत का विवरण देते हैं और भगत परमानंद तथा भीखन शाह जैसे समकालीनों के विचारों के साथ उनके दृष्टिकोण की समानता को उजागर करते हैं। दार्शनिक रूप से, वे नश्वरता पर उनकी अंतर्दृष्टि, बाहरी अनुष्ठानों की तुलना में आंतरिक ज्ञान के महत्व, पौराणिक कथाओं की रूपकात्मक व्याख्याओं, और इस विचार में गहराई से उतरते हैं कि दिव्य ऊर्जा सर्वव्यापी है। ये तत्व यह समझने का एक ढांचा तैयार करते हैं कि गुरु नानक की गंगा के मैदानों में यात्रा केवल एक भौगोलिक अभियान ही नहीं, बल्कि उनके समय की रुहानी परंपराओं और प्रथाओं की दार्शनिक खोज भी थी।

ऐतिहासिक चर्चा संकेतक:

१. **गुरु नानक के समय नानकपुरी टांडा का ऐतिहासिक महत्व क्या था, और वहां कौन-कौन से स्मारक स्थल मौजूद हैं?**

एपिसोड टांडा को तराई क्षेत्र का एक नगर बताता है, जो १४वीं शताब्दी के दौरान व्यापारियों के लिए एक ठहराव स्थल था और यहाँ कई खानाबदोश रहते थे। जब गुरु नानक ने यहाँ यात्रा की, तब यह क्षेत्र रोहिलखंड के नाम से जाना जाता था और दास व्यापार के लिए बदनाम था। आज, टांडा के इस छोटे से नगर में पाँच गुरुद्वारे हैं, जो सभी गुरु नानक की यात्रा को एक ऐसी कथा से जोड़ते हैं, जो प्रारंभिक 'जनमसाखियों' में दर्ज नहीं है। ये स्थल उस कथा को स्मरण कराते हैं जिसमें कहा जाता है कि गुरु नानक ने स्वयं को एक बालक के रूप में परिवर्तित कर लिया, जिससे एक 'रोहिल्ला पठान' उन्हें चार बार अपहरण करके बेच सका, और उन्होंने विभिन्न चमत्कारों के माध्यम से अपनी स्वतंत्रता प्राप्त की। यह वृत्तांत गुरु नानक की यात्रा की ऐतिहासिक स्मृति को किस प्रकार चित्रित करती है? इसके अतिरिक्त, विवरण के प्रति कथाकार का संदेह, गुरु नानक के ऐतिहासिक संबंधों और उनके महत्व की व्याख्या करने के लिए उपयोग किए जाने वाले विविध दृष्टिकोणों और पद्धतियों पर किस प्रकार प्रकाश डालता है?

२. **गोला गोकर्णनाथ में नाथ योगियों की ऐतिहासिक भूमिका क्या थी, और उनका गुरु नानक के साथ किस प्रकार संवाद हुआ?**

एपिसोड गोला गोकर्णनाथ को एक प्राचीन नगर के रूप में वर्णित करता है, जो अपने गोला गोकर्ण शिव मंदिर के लिए प्रसिद्ध है, जो कभी 'नाथ योगियों' (सन्यासियों) का केंद्र था। इसमें उल्लेख किया गया है कि १६वीं शताब्दी के दौरान 'नाथ योगी' (सन्यासी) इस मंदिर का एक अभिन्न हिस्सा थे। कहा जाता है कि गुरु नानक ने अपनी यात्रा के दौरान गोला गोकर्णनाथ में उनके साथ संवाद किया था। इस मंदिर में शिव का एक अद्वितीय निराकार प्रतिमा (शिवलिंग) स्थित है, जो पारंपरिक बेलनाकार आकार के बजाय गाय के कान के आकार का है। गुरु नानक और नाथ योगियों के बीच हुए इन संवादों से उस समय के उत्तरी भारत के धार्मिक परिदृश्य के बारे में क्या पता चलता है, और गुरु नानक की रुहानी चर्चा की पद्धति उनके अभ्यासों से किस प्रकार भिन्न या समान थी?

३. **भक्ति और सूफीवाद के समानांतर सुधारवादी आंदोलनों ने गुरु नानक के विचारों के लिए ऐतिहासिक संदर्भ किस प्रकार तैयार किया?**

एपिसोड बताता है कि गुरु नानक के समय, हिंदू और मुस्लिम धर्मों के अधिकांश अनुयायियों के लिए धर्म की संकल्पना पुरोहित वर्ग के आदेशों का पालन करने और पारंपरिक अनुष्ठानों को निभाने तक सीमित थी। समय के साथ, इससे मूल दार्शनिक विचारों की सार्वभौमिक स्वीकृति में कमी आने लगी। इसके उत्तर में, १०वीं शताब्दी की शुरुआत में दो समानांतर सुधारवादी आंदोलन उभरे - हिंदू धर्म में 'भक्ति' और इस्लाम में 'सूफीवाद'। दोनों असहमति दर्शाने वाली आवाज़ें एक ही ईश्वर की भक्ति को व्यक्त करने के लिए स्थानीय भाषा में कविता के माध्यम से उत्तर दे रही थीं। गुरु नानक को अद्वैतवाद (मोनिज़्म) के समर्थक के रूप में वर्णित किया गया है - वह सिद्धांत जो एकता को स्वीकार करता है और द्वैतवाद को अस्वीकार करता है। उनकी विचारधारा 'भक्ति' और 'सूफी' संतों के समान थी। धार्मिक सुधार आंदोलनों की इस ऐतिहासिक पृष्ठभूमि ने गुरु नानक के समता के संदेश के लिए किस प्रकार उर्वर भूमि प्रदान की?

४. **गुरु नानक के समकालीन भगत परमानंद और भीखन शाह के बारे में हम क्या सीखते हैं, और उनकी स्मृतियों को कैसे संरक्षित किया गया है?**

एपिसोड में बताया गया है कि भगत परमानंद को गुरु नानक का समकालीन माना जाता है। भले ही इस बात का कोई प्रमाण नहीं है कि वे दोनों मिले थे, लेकिन चूंकि उनका एक सबद 'गुरु ग्रंथ साहिब' में अंकित है, इससे हमें ज्ञात होता है कि उनके विचार दार्शनिक रूप से समान थे। इसी प्रकार, भीखन शाह काकोरी गाँव के एक सूफी संत थे। वे गुरु नानक के समकालीन थे और उनका जन्म १४८३ ईस्वी में हुआ

था। एपिसोड में उल्लेख किया गया है कि कन्नौज में, कथावाचक ने भगत परमानंद से जुड़ा कोई स्मारक खोजने के लिए अथक प्रयास किया, लेकिन स्थानीय निवासी इस भक्त संत से अनभिज्ञ थे। इसके विपरीत, काकोरी में भीखन शाह की विरासत उनके वंशजों द्वारा जीवित रखी गई है, जो उनके स्मारक पर एक अध्ययन केंद्र संचालित करते हैं। इन विभिन्न ऐतिहासिक स्मृतियों के रूप क्या दर्शाते हैं कि रुहानी धरोहरों को समय और स्थान के अनुसार कैसे संरक्षित किया जाता है, और गुरु ग्रंथ साहिब में उनके सबदों को शामिल किए जाने से उनकी स्थायी प्रभावशीलता का क्या महत्व हो सकता है?

५. **अयोध्या और सिख गुरुओं के बीच क्या ऐतिहासिक संबंध थे, और इन्हें किस प्रकार स्मरण किया जाता है?**

एपिसोड में उल्लेख किया गया है कि गुरु नानक अयोध्या आए थे, उन लोगों से संवाद करने के लिए जो रामचंद्र की आराधना के लिए तीर्थयात्रा पर आते थे। इसमें यह भी बताया गया है कि ९वें सिख गुरु, गुरु तेग बहादुर और १०वें सिख गुरु, गुरु गोबिंद सिंह ने भी अयोध्या की यात्रा की थी। गुरुद्वारा ब्रह्मकुंड गुरु नानक की अयोध्या यात्रा की स्मृति में बनाया गया है। यह स्थल गुरु तेग बहादुर (९वें सिख गुरु) और गुरु गोबिंद सिंह (१०वें सिख गुरु) की अयोध्या यात्राओं की भी स्मृति कराता है। इसके अतिरिक्त, गुरुद्वारा नजरबाग एक शाही बाग में बना है, जिसे अयोध्या के राजा मान सिंह ने गुरु गोबिंद सिंह को दान में दिया था। राजा मान सिंह के वंशज यतींद्र मिश्रा के अनुसार, जब गुरु गोबिंद सिंह (१०वें नानक) अयोध्या आए, तो वे एक बाग में ठहरे और अपने आध्यात्मिक संदेश दिए, जिससे कई लोग उनके प्रति आकर्षित हुए। उस समय के अयोध्या के राजा ने आकर गुरु गोबिंद सिंह को प्रणाम किया। सिख गुरुओं की अयोध्या यात्राएँ सिख परंपरा में इस नगर के महत्व के बारे में क्या संकेत देती हैं?

दार्शनिक चर्चा संकेतक:

१. **नानकपुरी टांडा में, गुरु नानक हमें अस्थायित्व और जीवन की क्षणभंगुरता के विषय में चिंतन करने के लिए कैसे प्रेरित करते हैं?**

एपिसोड गुरु नानक के उस शबद से प्रारंभ होता है जिसमें वे कहते हैं कि राजा, रईस, धनवान और संत—सभी को एक दिन जाना होगा। कोई भी यहाँ स्थायी नहीं है। यह आगे दर्शाता है कि समय एक ऐसा आयाम है जिसे बाँधा नहीं जा सकता। यह एक अति सूक्ष्म क्षण है, जिसमें न भूतकाल होता है, न भविष्य। सत्य यह है कि सबकुछ अस्थायी है, तो फिर क्यों किसी चीज़ को पकड़कर रखा जाए? जीवन को इस प्रकार जियो जैसे यह अंतिम क्षण हो। टांडा में एक परिवार को नवजात शिशु की मृत्यु पर शोक मनाते देखकर, गुरु नानक ने समझाया कि सुख और दुख क्षणिक होते हैं। जन्म और मृत्यु जीवन का

खेल हैं, जो प्रकृति का सर्वोच्च नियम है। इन पर अत्यधिक चिंतन करना व्यर्थ है। विवेकपूर्ण ढंग से जिया गया एक छोटा जीवन भ्रम में बिताए गए लंबे जीवन से अधिक महत्वपूर्ण है। यह दार्शनिक दृष्टिकोण जीवन की चुनौतियों को नेविगेट करने के लिए किस प्रकार एक ढाँचा प्रदान करता है? इसके अलावा, यह शोक और हानि से जूझ रहे व्यक्तियों को किस प्रकार सांत्वना दे सकता है?

२. गुरु नानक का ग़ुलामी पर दार्शनिक आलोचना क्या है, जो शाब्दिक और रूपक दोनों रूपों में व्यक्त की गई है?

नानकपुरी टांडा, जो कभी दास व्यापार के लिए कुख्यात था, वहाँ गुरु नानक एक शबद में सर्वव्यापक शक्ति से प्रार्थना करते हैं कि वह हमें ज्ञान का प्रकाश प्रदान करे और सत्य को नम्र लोगों तक पहुँचाए। एपिसोड गुरु नानक की दासता (ग़ुलामी) की उपमा पर चर्चा करता है, जो यह दर्शाती है कि वे सृष्टि की वास्तविकता से एकाकार हुए लोगों की सेवा में स्वयं को समर्पित करने के लिए तत्पर थे। यह भी इंगित किया गया है कि जब लोग अपने दैनिक जीवन की चिंताओं में उलझे रहते हैं, तो उनका मन गहरे दार्शनिक सत्य को समझने के बजाय केवल सतही चीज़ों पर केंद्रित रहता है। गुरु नानक दासता (ग़ुलामी) की अवधारणा को उत्पीड़न से बदलकर रुहानी उन्नति के लिए एक स्वैच्छिक विकल्प के रूप में कैसे पुनर्परिभाषित करते हैं? यह भौतिक और रुहानी दोनों स्तरों पर स्वतंत्रता और बंधन के बारे में क्या इंगित करता है?

३. गुरु नानक ने गोला गोकर्णनाथ में अपने रुहानी संवाद में ज्ञान, भक्ति और अज्ञानता को कैसे परिभाषित किया?

गोला गोकर्णनाथ मंदिर में राजा रावण की कथा पर विचार करते हुए, कथावाचक प्रश्न उठाता है—ज्ञान, भक्ति और अज्ञानता क्या है? गुरु नानक का सबद इंगित करता है कि अज्ञानता, पीड़ा और संदेह, जो भीतर निवास करते हैं, वे ज्ञान के माध्यम से समाप्त हो जाते हैं। जिन्हें ज्ञान प्राप्त करने का आशीर्वाद प्राप्त होता है, वे आत्मचिंतन का अभ्यास करते हैं। कथावाचक इसे इस प्रकार व्याख्या करता है कि यदि कोई ज्ञान प्राप्त कर भी ले और उसमें अहंकार बना रहे, तो वह अज्ञानता ही है। अज्ञानता के मूल कारण को समझना ही सच्चा ज्ञान है। एकता के नियम को स्वीकार करना ही सच्ची भक्ति है। यह दार्शनिक ढाँचा पारंपरिक ज्ञान और अज्ञानता की समझ को कैसे चुनौती देता है, और यह बौद्धिक ज्ञान तथा आध्यात्मिक विनम्रता के संबंध में क्या सुझाव देता है?

४. गुरु नानक का अद्वैतवाद का दर्शन भक्ति और सूफी परंपराओं के साथ कैसे मेल खाता है और संभवतः उन्हें कैसे पार कर जाता है?

एपिसोड में बताया गया है कि गुरु नानक भी अद्वैतवाद के समर्थक थे—वह सिद्धांत जो एकता को स्वीकार करता है और द्वैत को अस्वीकार करता है। उनका दर्शन 'भक्ति' और 'सूफी' संतो की शिक्षाओं के अनुरूप था। दोनों ही परंपराओं ने अपनी भक्ति को व्यक्त करने के लिए स्थानीय भाषा में कविता का सहारा लिया और अपने समर्पण को एक ही एकीकृत शक्ति, सृजनहार के प्रति व्यक्त किया। इस दृष्टिकोण को अनवर हबीब अल्वी की टिप्पणी से बल मिलता है, जिसमें वे कहते हैं कि भीखन शाह की दृष्टि गुरु नानक के संदेश से मेल खाती थी, जो यह था कि मानवता को परस्पर अपनाना चाहिए, उदार बनना चाहिए और एक-दूसरे से प्रेम करना चाहिए। अल्वी आगे बताते हैं कि जब सूफियों और संतो की रचनाओं को 'गुरु ग्रंथ साहिब' में संकलित किया गया, तब यह स्पष्ट हुआ कि इन विद्वान संतो की शिक्षाएं कितनी सुंदरता से एक ही ग्रंथ में समाहित हो गईं। इस संसार में लोगों को जोड़ने का एकमात्र माध्यम प्रेम ही है। गुरु नानक का अद्वैतवाद में विश्वास धार्मिक सह-अस्तित्व और एकता के लिए कैसे एक दार्शनिक आधार प्रदान करता है, और यह उनके समय की सुधारवादी परंपराओं को कैसे पार करता है?

५. भगत परमानंद का सबद शास्त्र ज्ञान और सच्ची भक्ति के बीच के संबंध को कैसे प्रकट करता है?

इस एपिसोड में, भगत परमानंद यह प्रश्न उठाते हैं कि हमने शास्त्रों को सुनकर क्या सीखा? अब तक सुदृढ़ भक्ति विकसित नहीं हुई है, और जरूरतमंदों की सहायता करने की भावना भी अनुपस्थित है। मन से क्रूरता समाप्त नहीं हुई है और दूसरों के प्रति दयालुता भी नहीं पनपी है। परमानंद कहते हैं कि पुण्यात्माओं की संगति में रहकर भी ज्ञान प्राप्त करने की प्रेरणा नहीं मिलती। कथावाचक समझाते हैं कि भगत परमानंद अपने सबद में यह बताते हैं कि वास्तविक भक्ति और नैतिक आचरण को धार्मिक अनुष्ठानों से अधिक महत्त्व दिया जाना चाहिए। केवल शास्त्रों का सतही पाठ व्यक्ति के चरित्र में व्याप्त नकारात्मकता को समाप्त नहीं कर सकता। भक्ति केवल सकारात्मक विचारों की संगति से ही आत्मसात की जा सकती है। यह दार्शनिक आलोचना धार्मिक ग्रंथों को पढ़ने की प्रचलित परंपरा को किस प्रकार चुनौती देती है, और यह रुहानी उन्नति के लिए कौन सा वैकल्पिक मार्ग सुझाती है?

६. भीखन शाह रुहानी अनुभव को व्यक्त करने में भाषा की सीमाओं को कैसे प्रकट करते हैं?

एपिसोड में भीखन शाह के सबद का उल्लेख किया गया है, जिसमें वे कहते हैं कि सृजनहार के गुणों को शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता। यह वैसा ही है जैसे कोई मूक व्यक्ति मिठास को शब्दों में वर्णित करने का प्रयास करे। जो जीभ उच्चारण करती है, जो कान शांति के शब्द सुनते हैं, और जो मन चिंतन करता है, वे आनंद की अनुभूति कराते हैं। वे कहते हैं, मेरी आँखें तृप्त हैं और जहाँ भी मैं देखता हूँ, मुझे

सृजनहार की उपस्थिति दिखाई देती है। कथावाचक समझाते हैं कि जैसे कोई बोलने में असमर्थ व्यक्ति मिठाई के स्वाद को व्यक्त नहीं कर सकता, वैसे ही आत्मबोध की परम अवस्था को शब्दों में नहीं बताया जा सकता। यह दार्शनिक अंतर्दृष्टि भाषा और बौद्धिक समझ की सीमाओं को किस प्रकार चुनौती देती है, और यह किस प्रकार की वैकल्पिक अनुभूति की विधि को प्रस्तुत करती है?

७. गुरु नानक रामायण के कथानक को आंतरिक रुहानी परिवर्तन के रूप में कैसे पुनःव्याख्यायित करते हैं?

एपिसोड रामायण की एक रूपक व्याख्या प्रस्तुत करता है, जिसमें रामचंद्र शुद्ध चेतना का प्रतीक हैं, जो 'अयोध्या' में निवास करते हैं, एक ऐसा स्थान जहाँ कोई संघर्ष नहीं होता। रामचंद्र के पिता 'दशरथ' के नाम का विश्लेषण करने पर यह दो शब्दों से मिलकर बना है—'रथ', जो शरीर का प्रतीक है, और 'दश', जो दस इंद्रियों और कर्मेंद्रियों का प्रतिनिधित्व करता है। रामचंद्र की पत्नी, सीता, मन का प्रतीक हैं। रामचंद्र और सीता का वनवास सांसारिक उलझनों को दर्शाता है। द्वैत की स्थिति में, सीता (मन) अहंकार से प्रभावित हो जाती हैं, जिसे प्रतीकात्मक रूप से रावण के रूप में प्रस्तुत किया गया है। वानरों की सेना स्वतंत्र इच्छा की चपलता का प्रतीक है, जो क्रियाओं को निष्पादित करने में सहायक होती है। युद्ध आंतरिक विचारों का प्रतीक है, जो बुरी प्रवृत्तियों को पराजित करने के लिए किया जाता है। विजय तब प्राप्त होती है जब व्यक्ति अपनी इच्छाओं के मूल केंद्र, अर्थात नाभि को नियंत्रित कर लेता है। एक बार जब इच्छाओं पर विजय प्राप्त कर ली जाती है, तो मानव मन पुनः संतुलन की अवस्था में लौट आता है। यह प्रतीकात्मक व्याख्या एक प्रसिद्ध धार्मिक कथा को आंतरिक आध्यात्मिक विकास के मार्गदर्शक के रूप में कैसे परिवर्तित करती है, और यह गुरु नानक की स्थापित धार्मिक परंपराओं के साथ संवाद करने की विधि के बारे में क्या इंगित करती है?

८. गुरु नानक अयोध्या में अनुष्ठानिक प्रथाओं की किस प्रकार आलोचना करते हैं, और इसके स्थान पर कौन सा वैकल्पिक मार्ग सुझाते हैं?

एपिसोड में बताया गया है कि अयोध्या में, जब गुरु नानक ने लोगों को कठोर तपस्याएँ करते हुए देखा, यह सोचते हुए कि ये उन्हें मुक्ति प्रदान करेंगी, तो उन्होंने एक सबद गाया जिसमें कहा कि यज्ञ, दान, तपस्या, उपासना और शारीरिक कष्ट सहने के बावजूद, मन निरंतर पीड़ा में रहता है। आत्मचिंतन के बिना मुक्ति संभव नहीं है। शांति की अवस्था उन्हें प्राप्त होती है जो ज्ञान की खोज करते हैं। कथावाचक निष्कर्ष निकालते हैं कि हम दिन-रात भ्रम में भटकते हैं। मुक्ति सादगी और ईमानदारी से भरे जीवन में है, न कि कठोर तपस्या में। यह दार्शनिक आलोचना बाहरी धार्मिक प्रथाओं की प्रभावशीलता को किस

प्रकार चुनौती देती है, और गुरु नानक किस प्रकार की आंतरिक रुहानी साधना को मुक्ति के वैकल्पिक मार्ग के रूप में प्रस्तुत करते हैं?

९. गुरु नानक का सर्वव्यापक दिव्य शक्ति के विषय में दर्शन, पारंपरिक तीर्थ यात्राओं को कैसे चुनौती देता है?

एपिसोड गुरु नानक के सबद के साथ समाप्त होता है, जिसमें वे कहते हैं कि सर्वव्यापक को दूर जाकर खोजने की आवश्यकता नहीं है; वह भीतर ही है। दिव्य शक्ति की उपस्थिति को पहचानो। कथावाचक समझाते हैं: मानव मन मूर्त चीज़ों में दिव्यता को खोजता है। गुरु नानक कहते हैं कि दूर क्यों जाना, जब दिव्यता स्वयं शरीर के भीतर स्थित है, जो उसका मंदिर है। इसे केवल पहचाने जाने की आवश्यकता है। इससे पहले, अयोध्या में, गुरु नानक ने कहा था कि सर्वव्यापक अविनाशी और निराकार है। शेष सभी रूप नष्ट हो जाते हैं। कई रूपों की कथाएँ हैं और कई प्रतिबिंब शास्त्रों में मिलते हैं। कई लोग नृत्य करते हैं और भीख माँगते हैं, सांसारिक धुन पर घूमते रहते हैं। जैसे व्यापारी बाज़ार में अपने सामान को प्रदर्शित करने आते हैं। यह दार्शनिक दृष्टिकोण दिव्य सर्वव्यापकता के संदर्भ में पारंपरिक पवित्र स्थलों और तीर्थयात्रा की अवधारणा को कैसे चुनौती देता है, और यह किस प्रकार की वैकल्पिक रुहानी साधना का सुझाव देता है?